SUNDAY | 03.05.2020 उत्तराखंड amarujala.com

अमर उजाला

•••• D वर्ष 24 | अंक 68 | पृष्ठ : 12 | मूल्य : छह रुपये देहरादून • 6 राज्य • 2 केंद्रशासित प्रदेश • 21 संस्करण

घर पर रहें
सुरक्षित रहें
कोरोना की चेन तोड़ें
• मास्क पहनें • बार-बार हाथ धोएं
सार्वजनिक दूरी बनाए रखें

रंग लाई मेहनत

मुन्नादेवल के विनोद मैठाणी ने स्वरोजगार से मजबूत की आर्थिकी

मुनीमगिरी छोड़ सब्जी उगाई, चार और को दिया रोजगार

अमर उजाला ब्यूरो

रुद्रप्रयाग। पीजी की पढ़ाई और बीपीएड की ट्रेनिंग भी मुन्ना देवल के विनोद को सरकारी नौकरी नहीं दिला सकी। जीविका के लिए उन्होंने ऋषिकेश के एक व्यापारी के यहां मुनीमगिरी शुरू कर दी। 17 साल यह काम करने के बाद आखिर वह 2015 में गांव लौट आए और अपनी सौ नाली जमीन पर खेतीबाड़ी शुरू कर दी। सब्जी और नगदी फसलें उगाकर वह खुद तो हजारों की कमाई कर ही रहे हैं, चार अन्य को भी उन्होंने रोजगार दिया है।

विनोद के अनुसार डेढ़ दशक तक प्राइवेट नौकरी करके भी उन्होंने जो हासिल नहीं किया, वह उन्हें पांच साल में मिल गया। उन्हें आज इस बात का अफसोस है कि चंद हजार रुपये के लिए शहर की भागमभाग भरी जिंदगी का हिस्सा बने। एक दिन उन्होंने शहर की जिंदगी छोड़कर गांव में अपने बंजर खेतों को फिर से हरा-भरा करने का निर्णय लिया और खुद ही फावड़ा, कुदाल लेकर जुट गए।

रुद्रप्रयाग जनपद के मुन्नादेवल गांव के काश्तकार विनोद मैठाणी

लॉकडाउन में भी कमाए 50 हजार

विनोद बताते हैं कि वह लॉकडाउन में भी 12 क्विंटल मटर बेच चुके हैं, जिससे उन्हें 50 हजार रुपये की कमाई हुई है। वह मटर के साथ ही बीन्स, अदरक और लहसुन का उत्पादन कर रहे हैं। ज्यादातर उनकी मटर खेतों से ही उठ जाती है।

बागवानी खोल सकती है समृद्धि के द्वार

उत्तरकाशी। जिले में सेब आदि फलों की बागवानी किसानों के लिए समृद्धि के द्वार खोल सकती है। सेब उत्पादन में अग्रणी जनपद में अभी तक बागवानी की 50 फीसदी संभावनाओं का भी उपयोग नहीं हो पाया है।

जिले में सेब सहित अन्य फलों की खूब है भरमार

कोरोना महामारी की वजह से हुआ रिवर्स पलायन और आने वाले मंदी के दौर में रोजगार का संकट जिले में बागवानी की संभावनाओं की ओर इशारा कर रहा है। सेब के अलावा जनपद में आड़ू, खुमानी, पुलम, कीवी, चेरी, नैक्ट्रीन, नाशपाती, अखरोट, बादाम आदि की बागवानी की काफी संभावनाएं हैं। जनपद में अभी तक बागवानी योग्य जमीन का महज 40 से 50 फीसदी ही उपयोग में लाया जा रहा है। जिले की फल पट्टी वाले उपला टकनौर, स्योरी नौगांव और आराकोट बंगाण क्षेत्र में किसान बागवानी से सालाना 2 से 10 लाख रुपये तक कमाते हैं। प्रभारी कृषि विज्ञान केंद्र डा. पंकज नौटियाल का कहना है कि रूट स्टाक तकनीकी से तैयार सेब, आड़ू, नैक्ट्रीन, पुलम, चेरी, नाशपाती, अखरोट की बागवानी दो-तीन साल में ही अच्छा नतीजा दे सकती है। बागवानी के क्षेत्र में कटिंग, प्रूनिंग आदि कार्यों में रोजगार की अच्छी संभावनाएं हैं। सहायक उद्यान अधिकारी एनके सिंह का कहना है कि जिले में बागवानी की अपार संभावनाएं हैं। लोग आगे आएं तो केंद्र पोषित एवं राज्य की बागवानी विकास की योजनाओं की कमी नहीं है। ब्यूरो